भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा-1 सत्र 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर - 1

दत्त कार्य - 1

कुल अंक - 15

नोट :- किन्हीं पाँच प्रश्नो के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(अ) नासिक्य व्यंजनों की कुल संख्या कितनी है।

(ब) हिन्दी के उत्क्षिप्त व्यंजनों की कुल संख्या कितनी है।

(स) हिन्दी अर्ध स्वरो की कुल संख्या कितनी है।

(द) 'मूल शब्द' को दूसरे किस नाम से भी जाना जाता है।

(इ) क्रिया के कितने भेद है।

(ई) सरल वाक्य कितने प्रकार के होते हैं।

खण्ड - एक

2. भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा की प्रकृति पर विस्तार से लिखिए।

अथवा

ध्वनियों का वर्गीकरण करते हुए ध्वनि परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - दो

3. वाक्य की परिभाषा देते हुए वाक्य के प्रकारों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए

अथवा

अर्थ परिवर्तन के कारण एवं दिशाओं का उल्लेख कीजिए।

खण्ड - तीन

4. प्राचीन भारतीय लिपियों का इतिहास प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड - चार

5. वैदिक एवं लौकिक संस्कृत भाषाओं की संरचना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

अवधी भाषा की ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक संरचना सविस्तार लिखिए।

Sunita Rani

भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा सत्र - 2019-20
एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)
अनिवार्य पेपर - 1
दत्त कार्य - 2 कुल अंक - 15

नोट :- किन्हीं पाँच प्रश्नो के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. निम्नलिखित अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(अ) 'पुरानी हिन्दी' ग्रंथ के लेखक है।
(ब) भाषाविज्ञान की सबसे महत्वपूर्ण शाखा है।
(स) कैयट ने किस ग्रन्थ की टीका लिखी थी।
(द) सबसे पहले किस विद्वान ने व्याकरण लिखा था
(इ) ध्वनि को भाषाविज्ञान में कहा जाता है।
(ई) हिन्दी भाषा में बलाघात के कितने भेद हैं।

खण्ड - एक

2. भाषा विज्ञान के अध्ययन की शाखाओं का परिचय दीजिए।

अथवा

ध्वनि उत्पति, ध्वनियंत्र एवं ध्वनियों के भेद पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - दो

3. अर्थ से क्या अभिप्राय है। अर्थ परिवर्तन क्यों हो जाता है? इसके समुचित कारण बताइए।

अथवा

शब्द और अर्थ के सम्बन्ध पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - तीन

4 देवनागरी लिपि का उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।

अथवा

देवनागरी लिपि के दोषो पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - चार

5. पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश की ध्वन्यात्मक संरचना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

ब्रज भाषा की ध्वन्यात्मक संरचना पर प्रकाश डालिए।

Sumita Rani

हिन्दी साहित्य का इतिहास सत्र – 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर – 2

दत्तकार्य – 1

कुल अंक – 15

नोट :– किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. निम्नलिखित अति लघुउत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(अ) आदिकाल को वीरगाथा काल किसने कहा है।

(ब) रासो काव्य कौन सी भाषा में लिखा गया।

(स) पद्मावत किसकी रचना है।

(द) सूरसागर किसकी रचना है।

(इ) रीतिकाल को अलंकृत काल किसने कहा है।

(ई) भारतेन्दु का जन्म कब हुआ।

खण्ड – एक

2. आदिकाल के नामकरण एवं काल विभाजन की समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

साहित्येतिहास से क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट करते हुए साहित्येतिहास दर्शन की समीक्षा कीजिए।

खण्ड – दो

3. सन्त काव्य धारा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भक्तिकाल के उद्भव एवं विकास के कारणों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड – तीन

4. रीतिकाल की परिस्थितियों पर विचार व्यक्त कीजिए।

अथवा

रीतिमुक्त की काव्यगत प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - चार

5. छायावादी काव्य का परिचय देते हुए इसकी सामान्य प्रवृत्तियाँ लिखिए।

अथवा

भारतेन्दुयुगीन काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

Sunita Ram

हिन्दी साहित्य का इतिहास सत्र - 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर - 2

दत्त कार्य - 2

नोट:- किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रथम प्रश्न अनिवार्य है सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. निम्नलिखित अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
(अ) आदिकाल को आदिकाल नाम किसने दिया।
(ब) सूफी काव्य किस भाषा में लिखा गया।
(स) पृथ्वीराज रासो किसकी रचना है।
(द) तुलसीदास की रचना रामचरितमानस की भाषा कौनसी है।
(इ) रीतिकाल को रीतिकाल किसने कहा है।
(ई) जयशंकर प्रसाद किस युग के कवि है।

खण्ड - एक

2. आदिकाल की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

हिन्दी साहित्येतिहास के लेखन - परम्परा का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

खण्ड - दो

3. सूफी काव्यधारा की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भक्तिकाल को हिन्दी साहित्य का स्वर्ण - युग क्यों कहा जाता है

खण्ड - तीन

4. रीतिकाल के नामकरण पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रीतिसिद्ध काव्य की सामान्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड - चार

5. द्विवेदीयुगीन काव्य की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

प्रगतिवादी काव्य - परम्परा पर प्रकाश डालते हुए उसकी

सामान्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

Sumita Rani

आधुनिक गद्य- साहित्य सत्र -2019-20
एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)
अनिवार्य पेपर - 3
दत्त कार्य - 1
कुल अंक-15

नोट:- किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

1 निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(अ) ओ, आप तहसील्दार हैं। ठीक बात। हमलोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का आदमी है। यहाँ पर एक मैलेरिया सेंटर बनेगा। ऊपर से हुकुम आया है यही बागान का जमीन में। मार्टिन साहब डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को यह जमीन बहुत पहले दे दिया" तहसीलदार साहब फिर एक बार सलाम करके बैठ गए। बिरंची हाथ जोड़े खड़ा रहा।

अथवा

तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद एक सेर घी, पाँच सेर बासमती चावल और एक खस्सी लेकर डरते हुए मलेटरी वालों को डाली पहुँचाने चले, बिरंची को साथ ले लिया। बोले, "हिसाब लगाकर देख लो, पूरे पचास रुपये का सामान है। यह रुपया एक हफ्ता के अंदर ही अपने टोले और लोबिन के टोले से वसूल कर जमा कर देना। तुम लोगों के चलते ---।" मलेटरी वाले कोठी के बगीचे में है, बगीचे के पास पहुँचकर विश्वनाथ प्रसाद ने जेब से पलिया टोपी निकालकर पहन ली और कालीथान की ओर मुँह करके माँ काली को प्रणाम किया, दुहाई माँ काली!"

(2)
(अ) घीसू खड़ा हो गया और बोला "हाँ बेटा बैकुण्ठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह न बैकुण्ठ जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लूटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढ़ाते हैं",

अथवा

उन आँखों की स्थिर दृष्टि जब महेन्द्र पर आकर पड़ती थी तो उसे ऐसा मालूम होने लगता कि मोहाविष्ट हुआ जा रहा है। और उसकी सारी आत्मा, यहाँ तक कि सारा शरीर भी अपना रूप बदल रहा है और यह किसी अव्यक्त तथा अतीन्द्रिय मायावी स्पर्श से क्षुब्ध क्षुब्ध हुआ जा रहा था वह उस स्थिर दृष्टि का तेज सहन न कर सकने के कारण आँखें फिरा लेता था।

3 "मैला आँचल" उपन्यास आँचलिक उपन्यास की कसौटी पर खरा उतरता है। इस कथन की समीक्षा कीजिए

अथवा

मैला आँचल का नायक आप किसे मानते हैं? प्रशांत को या मेरीगंज गाँव को - स्पष्ट कीजिए।

4 गोदान भारतीय कृषक-जीवन का महाकाव्य है" स्पष्ट कीजिए

अथवा

"गोबर अगली हुई पीढ़ी का प्रतीक है।" इस कथन के आलोक में गोबर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. 'उसने कहा था' कहानी में प्रेम और कर्तव्य के संघर्ष को चित्रित करते हुए इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'लैला की शादी' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

Sunita Rani

आधुनिक गद्य-साहित्य सत्र - 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर - 3

दत्त कार्य - 2

कुल अंक-15

नोट - किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

धनिया इतनी व्यवहार कुशल न थी उसका विचार था कि हमने जमींदार के खेत जोते हैं तो वह अपना लगान ही तो लेगा। उसकी खुशामद क्यों करें। उसके तलवे क्यों सहलाएँ। यद्यपि अपने विवाहित जीवन के इन बीस बरसों में उसे अच्छी तरह अनुभव हो गया कि चाहे कितनी ही कतर ब्योंत करो, कितना ही पेट-तन काटो, चाहे एक-एक कौड़ी को दाँत से पकड़ो, मगर लगान बेबाक होना मुश्किल है।

अथवा

किसी भाई का नीलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है, वह इस समय तुम्हारी गाय लेने में है। होरी में बाल की खाल निकालने की शक्ति होती तो वह खुशी से गाय लेकर घर की राह लेता। भोला जब नकद रुपये नहीं माँगता तो स्पष्ट था कि वह भूसे के लिए गाय नहीं बेच रहा है, बल्कि इसका कुछ और आशय है। लेकिन जैसे पत्तों के खड़कने पर घोड़ा अकारण ही ठिठक जाता है और मारने पर भी आगे कदम नहीं उठाता वही दशा होरी की थी।

2. "मेरीगंज गाँव रौतहट स्टेशन से सात कोस पूर्व में स्थित है। वहाँ पहुँचने के लिए बूढ़ी कोसी को पार करना पड़ता है। बूढ़ी कोसी के किनारे-किनारे बहुत दूर तक ताड़ और खजूरों के पेड़ों से भरा हुआ जंगल है। इसे नवाबी तड़बन्ना कहते हैं। तड़बन्ना के बाद एक बड़ा मैदान है जो नेपाल की तराई से शुरू होकर गंगाजी के किनारे खत्म हुआ है। लाखों एकड़ ज़मीन। बन्ध्या धरती का विचल अंचल"

अथवा

डॉक्टर। रोज डिस्पेंसरी खोलकर शिवजी की मूर्ति पर बेलपत्र चढ़ाने के बाद, संक्रामक और भयानक रोगों के फैलने की आशा में कुर्सी पर बैठे रहना, अथवा अपने बंगले पर सैकड़ों रोगियों की भीड़ जमा करके रोग की परीक्षा करने के पहले नोटों और रुपयों की परीक्षा करना, मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थियों पर पांडित्य की वर्षा करके अपने कर्तव्य की इतिश्री समझना और अस्पताल में कराहते हुए गरीब रोगियों के रुदन को जिंदगी का एक संगीत समझकर उपभोग करना ही डॉक्टर का कर्तव्य नहीं।

3. 'मैला आँचल' आँचलिकता की कसौटी पर खरा उतरता है? स्पष्ट करें।

अथवा

मैला आँचल में वर्णित ग्राम्य जीवन के सामाजिक संबंधों का चित्रण कीजिये।

4. गोदान आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद कृति है - स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'गोदान में नागरिक और ग्रामीण कथा एक साथ जुड़ी है।' स्पष्ट कीजिए।

5. कफन कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा

ताई कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

Sunita Ram

आधुनिक हिन्दी काव्य

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर-4

दत्त कार्य-2

29-12-20

कुल अंक-15

नोट:- निम्नलिखित पद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य है, सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. अवध को अपनाकर त्याग से,
वन तपोवन-सा प्रभु ने किया।
भरत ने उनके अनुराग से,
भवन में वन का व्रत लिया।

अथवा

आई थी सखि, मैं यहाँ लेकर हर्षोल्लास,
जाऊँगी कैसे भला देकर यह निःश्वास?
कहाँ जायेंगे प्राण ये लेकर इतना ताप?
प्रिय के फिरने पर इन्हें फिरना होगा आप।

2. ओ चिन्ता की पहली रेखा, अरी विश्व वन की व्याली।
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण प्रथम कम्प-सी मतवाली।
हे अभाव की चपल बालिके, री ललाट की खल लेखा।
हरी-भरी-सी दौड़ धूप, ओ जल-माया की चल रेखा।

अथवा

उस तपस्वी-से लम्बे थे देवदारु दो-चार खड़े,
हुए हिम धवल, जैसे पत्थर बन कर ठिठुरे रहे अड़े।
अवयव की दृढ़ मांस पेशियाँ ऊर्जस्वित था वीर्य अपार।
स्फीत शिरायें, स्वस्थ रक्त हा होता था जिनमें संचार।

3. साकेत के नवम् सर्ग के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

साकेत के महाकाव्य पर प्रकाश डालिए।

4. कामायनी के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कामायनी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

5. रश्मिरथी के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

रश्मिरथी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

Sunita Rani

आधुनिक हिन्दी काव्य सत्र - 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

अनिवार्य पेपर-4

दत्त कार्य - 1 कुल अंक - 15

नोट :- निम्नलिखित पद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. दो वंशों में प्रकट करके पावनी लोक-लीला
सौ पुत्रों से अधिक जिनकी पुत्रियाँ पूतशीला,
त्यागी भी हैं शरण जिनके जो अनासक्त गेही,
राजा-योगी जय जनक, वे पुण्यदेही, विदेही।

अथवा

पिऊँ ला खाऊँ ला, सखि, पहन लूँ ला, सब करूँ
जिऊँ मैं जैसे हो, यह अवधि का अर्णव तरूँ।
कहे जो, मानूँ सो, किस विध बता, धीरज धरूँ,
अरी कैसे झीले पकड़ प्रिय के वेपद मरूँ।

2. चिन्ता कातर वदन हो रहा, पौरुष जिसमें ओतप्रोत,
उधर उपेक्षामय यौवन का बहता भीतर मधुमय स्रोत।
बँधी महावट से नौका थी, सूखे में अब पड़ी रही,
उतर चला था वह जल प्लावन और निकलने लगी मही।।

अथवा

अरी आँधियो! ओ बिजली की दिवा-रात्रि तेरा नर्तन।
उसी वासना की उपासना, वह तेरा प्रत्यावर्तन।
मणि-दीपों के अन्धकारमय अरे निराशापूर्ण भविष्य
देव-दम्भ के महामेध में सब कुछ ही बन गया हविष्य।

3 'साकेत' के आधार पर उर्मिला का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'साकेत' नवम सर्ग के आधार पर उर्मिला की विरह-वेदना को स्पष्ट कीजिए।

4. कामायनी के रूपक तत्व की समीक्षा कीजिए

अथवा

जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित कामायनी के आधार पर श्रद्धा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

5. रश्मिरथी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रश्मिरथी महाकाव्य के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

Sumita Rani

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सत्र – 2019-20

एम॰ए॰ हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

वैकल्पिक पेपर – 5(i)

दत्त कार्य – 1

कुल अंक – 15

नोट :– निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. एक पंडित जी और एक क्षत्री आते हैं

क्षत्री : महाराज देखिए बड़ा अंधेर हो गया कि ब्राहमणों ने व्यवस्था दे दी कि कायस्थ भी क्षत्री है। कहिए अब कैसे कैसे काम चलेगा।

पंडित : क्यों इसमें दोष क्या हुआ ? "सबै जात गोपाल की" और फिर यह तो हिन्दुओं का शास्त्रा पनसारी की दुकान है और अक्षर कल्प वृक्ष है इस में तो सब जात की उत्तमता निकल सकती है पर दक्षिणा आप को बाएं हाथ से रख देनी पड़ेगी फिर क्या है फिर तो "सबै जातगोपाल की"

अथवा

देखो शराब पियो, विधवा विवाह करो, बालापाठशाला करो, आगे से लेने जाओ बाल्यविवाह उठाओ, जाति भेद मिटाओ, कुलीन का कुछ सत्यनाश में मिलाओ होटल में खाओ, लव करना सीखो, स्पीच दो, क्रिकेट खेलो, शादी में खर्च कम करो, मेम्बर बनो, दरबारदारी करो, पूजा पत्री करो, चुस्त चालाक बनो, हम नहीं जानते को हम नहीं जाता कहो, चक्करदार टोपी पहिनो वा सिर खुला रखो पर पौशाक सब तंग रक्खो, नाच, बाल थियेटर अरा गुड़गुड़ कंप्रिवी सिबी घरों में जाओ क्योंकी ये काम मूजिब होंगे खुदा और मेरी खुशी का।

अथवा

2. यहाँ पर विभिन्न प्रकार के दुकानदार अलग-अलग बोलियों में ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं। इन दुकानदारों में गरम चना बेचने वाला घासीराम है और सब्जी बेचने वाली कुंजड़िन है कबाबवाला हलवाई, मेवा बेचने वाला, परचून बेचने वाला सभी अपने-अपने

तरीके से आवाज़ लगाकर ग्राहकों को बुला रहे हैं नारंगी बेचने वाली, नीबू, संतरा आदि बेचने वाली स्त्रियाँ भी ग्राहकों को अपने पास बुला रहे हैं। यहाँ सभी कुछ टके सेर बिक रहा है।

अथवा

यहाँ का राजा मूर्ख, शराबी, कायर और डरपोक है। राजा इस समय नशे में है और उसके सेवक उसे और अधिक शराब पिला रहे हैं। राजदरबार में सभी मूर्ख दरबारी भरे हुए हैं। राजा अपने सेवक को बिना किसी कारण दण्ड देना चाहता है। लेकिन मन्त्री राजा की जी हजूरी करके सेवक को बचा लेता है। भले ही दरबार में सभी मूर्ख भरे हुए हैं लेकिन राजा तो महा मूर्ख है।

3. बंदर सभा का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए

अथवा

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन व साहित्यिक परिचय दीजिए।

4. अंधेर नगरी में निहित उद्देश्य को प्रतिपादित कीजिए।

अथवा

भारत दुर्दशा नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

5. 'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' निबंध के मूल मंतव्य को स्पष्ट कीजिए

अथवा

'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' निबंध के कथ्य पर प्रकाश डालिए।

Sunita Rani

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सत्र – 2019-20
एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)
वैकल्पिक पेपर – 5(1)
दत्त कार्य – 2
कुल अंक-15

नोट :- निम्नलिखित गद्यांशो की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। सभी प्रश्नों के समान अंक हैं।

1. आज बड़े आनंद का दिन है कि छोटे से नगर बलिया में हम इतने मनुष्यों को एक बड़े उत्साह से एक स्थान पर देखते हैं। इस अभागे आलसी देश में जो कुछ भी हो जाए वही बहुत है। बनारस ऐसे-ऐसे बड़े नगरों में जब कुछ नहीं होता तो हम यह न कहेंगे कि बलिया में जो कुछ हमने देखा वह बहुत ही प्रशंसा के योग्य है।

अथवा

स्वामी दयानन्द सरस्वती और बाबू केशवचन्द्रसेन के स्वर्ग में जाने से वहां एक बहुत बड़ा आंदोलन हो गया। स्वर्गवासी लोगों में बहुतेरे तो इन्हें घृणा करके धिक्कार करने लगे और बहुतेरे इनको अच्छा कहने लगे। स्वर्ग में भी 'कंसरवेटिव और लिबरल' दो दल हैं। जो पुराने जमाने के ऋषि-मुनि यज्ञ कर-करके या तपस्या करके अपने शरीर को सुखा-सुखाकर और पच-पचकर करके स्वर्ग गये हैं उनकी आत्मा का दल कंसरवेटिव है।

2 एक महंत अपने दो शिष्यों के साथ एक समृद्ध नगर में प्रविष्ट होते हैं। वे सभी राम भजन कर रहे हैं। उनके शिष्यों का नाम गोवर्धनदास और नारायण दास है। यह नगर बड़ा ही आकर्षक और समृद्ध दिखाई दे रहा है। महंत दोनों शिष्यों को आज्ञा देते हैं कि वे दोनों नगर में जाकर भिक्षा माँगकर लाए

अथवा

अचानक चार सिपाही वहाँ आते हैं और गोवर्धन को पकड़ लेते हैं। वे कहते हैं कि उसे फाँसी पर लटकाया जाएगा। मूलत: कोतवाल को फाँसी की सजा सुनाई गई थी लेकिन उसकी गर्दन काफी पतली है। वह फाँसी के फंदे में नहीं आ सकती। क्योंकि गोवर्धनदास की गर्दन मोटी है, अत: फाँसी का फंदा उसकी गर्दन में पूरा आ जाएगा। सिपाही यह भी बताते हैं कि नगर में राजा के डर के कारण कोई मोटा नहीं होता केवल गोवर्धनदास मोटा है, अत: यह फंदा उसी की गर्दन में डाला जाएगा। वह स्वयं को निर्दोष बताता है। वह रोता है, चिल्लाता है, पर कोई भी उसकी बात नहीं सुनता। अन्तत: वह अपने गुरु को सहायता के लिए पुकारता है। लेकिन चार सिपाही उसे पकड़कर श्मशान की ओर ले जाते हैं।

2. बंदर सभा काव्य संग्रह की कथ्यगत व शिल्पगत विशेषताएं बताइए।

अथवा

बंदर सभा काव्य संग्रह के माध्यम से अंग्रेजों की कुटनीति पर व्यंग्य किया गया है। स्पष्ट कीजिए।

3. अंधेर नगरी नाटक की समीक्षा कीजिए।

अथवा

भारत दुर्दशा नाटक का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'पाँचवे पैगम्बर' निबंध के मूल मंतव्य को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'हिन्दी भाषा' निबंध के कथ्य पर प्रकाश डालिए।

Sunita Rani

जयशंकर प्रसाद सत्र - 2019-20
एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)
वैकल्पिक पेपर - 5 (II)
दत्त कार्य - 1 कुल अंक-15

नोट :- निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नो के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के समान अंक है।

1. अब यह जीवन बोझ हो रहा है। क्या करूँ ? अकेली बैठी हूँ, इतना सोना है, परन्तु इसका भोग नहीं, इसका सुख नहीं। ओह! परन्तु नहीं, जिसके लिए अनंत सुख साधन है, रोकर बिता देने के लिए नहीं है। सब सुखी है, सब सुख की चेष्टा में है, फिर मैं ही क्यों कोने में बैठकर रूदन करूँ ?

अथवा

संगीत सभा की अन्तिम लहरदार और आश्रय हीन तान, धूपदान की एक क्षीण गन्ध रेखा, कुचले हुए फूलों का म्लान सौरभ और उत्सव के पीछे का अवसाद, इन सबों की प्रतिकृति मेरा क्षुद्र नारी जीवन। मेरे प्रिय गान! अब क्या गाँऊ, क्या सुनाँऊ ? इन बार -बार गाए गए गीतों में क्या आकर्षण है क्या बल है जो खींचता है ?

2. क्षितिज में नील जलधि और व्योम का चुम्बन हो रहा है। शांत प्रदेश में शोभा की लहरियाँ उठ रही हैं ? गोधूलि का करूण प्रतिबिम्ब बेला की बालुकामयी भूमि पर दिगन्त की तीक्षा का आवाह्न कर रहा है।

अथवा

पवन से विजय के बाल बिखर रहे थे। उसका मुख भय से विवर्ण था उसे अपने गिर जाने की निश्चित आशंका थी। सहसा एक युवक दौड़ता हुआ आगे बढ़ा, बड़ी तत्परता से घोड़े की लगाम पकड़कर उसके नथूने पर सबल घूँसा मारा। दूसरे क्षण वह उच्छृंखल अश्व सीधा खड़ा हो गया।

3. प्रकृति चित्रण की दृष्टि से 'आँसू' काव्य की समीक्षा कीजिए।

अथवा

आँसू की काव्य शैली को स्पष्ट कीजिए।

4. 'आकाशदीप कहानी संग्रह' में संकलित कहानी 'ममता' की तात्विक समीक्षा कीजिए

अथवा

कंकाल उपन्यास की भाषा शैली को स्पष्ट कीजिए

5. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के आधार पर स्कन्दगुप्त का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

कामना नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

SunitaRani

जयशंकर प्रसाद सत्र - 2019-20

एम०ए० हिन्दी (प्रथम सेमेस्टर)

वैकल्पिक पेपर - 501

दत्त कार्य - 2 कुल अंक - 15

नोट :- निम्नलिखित गद्यांशों की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए। कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं सभी प्रश्नों के समान अंक हैं।

1. स्कंदगुप्त : अधिकार - सुख कितना मादक और सारहीन है! अपने को नियामक और कर्ता समझने की बलवती स्पृहा उससे बेगार कराती है। उत्सवों में परिचारक और अस्त्रों में ढाल से भी अधिकार लोलुप मनुष्य क्या अच्छे हैं? उह! जो कुछ हो, हम साम्राज्य के एक सैनिक हैं।

पर्णदत्त : युवराज की जय हो!

स्कंदगुप्त : आर्य पर्णदत्त का अभिवादन करता हूँ। सेनापति की क्या आज्ञा है।

अथवा

धातुसेन : परम भट्टारक आपने भी स्वयं इतने विकट युद्ध किये हैं। मैंने समझा था, राज-सिंहासन पर बैठे - बैठे राजदंड हिला देने से ही इतना बड़ा गुप्त साम्राज्य स्थापित हो गया था परंतु . . .

कुमारगुप्त : (हंसते हुए) तुम्हारी लंका में अब राक्षस नहीं बसते - क्यों धातुसेन?

2. काशी के उत्तर धर्मचक्र विहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खंडहर था। भग्न चूड़ा, तृण - गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चंद्रिका में अपने को शीतल कर रही थी। जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम

का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले मिले थे उसी स्वरूप के अग्नावेश की मलिन छाया में एक झोपड़ी के दीपालोक में एक स्त्री पाठ कर रही थी

अथवा

समुद्र में हिलोरें उठने लगी। दोनो बंदी आपस में टकराने लगे। पहले बंदी ने अपने को स्वतंत्र कर लिया। दूसरे का बंधन खोलने का प्रयत्न करने लगा। लहरों के धक्के एक-दूसरे को स्पर्श से पुलकित कर रहे थे। मुक्ति की आशा-स्नेह का असंभावित आलिंगन। दोनो ही अंधकार में मुक्त हो गये। दूसरे बंदी ने हर्षातिरेक से उसको गले से लगा लिया। सहसा उस बंदी ने कहा - यह क्या? तुम स्त्री हो?

"क्या स्त्री होना कोई पाप है?" - अपने को अलग करते हुए स्त्री ने कहा। "शस्त्र कहाँ है - तुम्हारा नाम?"

"चंपा।"

3. आँसू का रूप - सौंदर्य वर्णन कीजिए।

अथवा

गीतिकाव्य की दृष्टि से 'आँसू' काव्य की समीक्षा कीजिए।

4. 'आकाशदीप' कहानी संग्रह के आधार पर प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना पर विचार कीजिए।

अथवा

कंकाल उपन्यास की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए

5. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के आधार पर प्रसाद की राष्ट्रीय भावना का विवेचन कीजिए। अथवा

कामना नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

Sunita Rani